लाडलियां लाहूत की

लाडलियां लाहूत की, जाकी असल चौथे आसमान।
बड़ी बड़ाई इन की, जाकी सिफत करें सुभान।।
सो उतरी अर्स अजीम से, रूहें बारे हजार।
साथ सेवक मलायक, पावे दुनियां सब दीदार।।
मोती कहे जो इन को, जाको मोल न काहूं होए ।
बारे डाली गिनती, सूरत आदमी सोए।।
मोमिन बड़े मरातबे, नूर बिलंद से नाजल।
इनों काम हाल सब नूर के, अंग इस्कै के भीगल।।
औलिया लिल्ला दोस्त, जाके हिरदे हक सूरत।
बंदगी खुदा और इनकी, बीच नाहीं तफावत।।
लोक जिमी आसमान के, साफ जो करसी सब।
बुजरकी इन गिरोह की, ऐसी देखी न सुनी कब।।
खुदा देवे साहेदी खुदाए की, और ना किनहूं होए।
करें बयान फुरमावें हुकम, लायक पूजने के सोए।।